इकाई 13 साम्राज्यवादी विचारधारा : ओरियंटलिस्ट तथा उपयोगितावाद

इकाई की रूपरेखा

13.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- भारत संबंधी ब्रिटिश दृष्टिकोण के पनपने की प्रक्रिया का उल्लेख कर सकेंगे,
- भारत संबंधी ब्रिटिश दृष्टिकोण के बदलते स्वरूप पर प्रकाश डाल सकेंगे, और
- भारत संबंधी दृष्टिकोण के बदलते स्वरूप के कुछ कारणों को रेखांकित कर सकेंगे।

13.1 प्रस्तावना

अभी तक आपने मुगल साम्राज्य के पतन के बाद नये राज्यों के निर्माण और उसके बाद ब्रिटिश साम्राज्यवाद के उदय और भारत में प्रवेश की जानकारी प्राप्त की। अब हम भारत के संबंध में अंग्रेजों के दृष्टिकोण और विचारों से अवगत होंगे। हम इस बात पर भी विचार विमर्श करेंगे कि किस प्रकार अंग्रेजों ने अपनी आवश्यकता के अनुरूप भारत संबंधी अपने दृष्टिकोण और विचार में परिवर्तन किए।

13.2 आरंभिक धारणा

आरंभ में अंग्रेजों के दिमाग में भारत की एक तस्वीर बनी थी, यह तस्वीर उनके अपने पाश्चात्य अनुभव और खोज के लिए की गयी यात्राओं पर आधारित थी। एडवर्ड टेरी और जॉन ओविंगटन भारत की यात्रा करने वाले आरंभिक यात्रियों में से एक थे, उन्होंने 1659 के मुगल शासन को "मुस्लिम निरंकुशता का एक अन्य उदाहरण" के रूप में वर्जित किया है। आरंभ में आने वाले ब्रिटिश यात्री बर्नियर के लेखन से परिचित थे और उन्हें इसी के माध्यम से ऑटोमन और फारसी साम्राज्यों की जानकारी मिली थी। इस विवरण को "आंखों देखा हाल" समझ मुगल साम्राज्य और भारत के बारे में उन्होंने अपनी धारणा बना ली। क्लासिकल युग के विद्वान सर विलियम टेम्पल का मानना था कि लीकुरगुस और पायथागोरस ने भारतीयों से ही शिक्षा ग्रहण की थी। अंग्रेजों के बीच यह आम धारणा थी कि 17वीं शताब्दी में भारत में परम्परागत शिक्षा लुप्त हो चुकी थी। टेरी का तर्क है कि प्राचीन काल में शिक्षा देने वाले ब्राह्मणों का पतन हो चुका था।

अंग्रेज इस पतन या अवनति के उदाहरण भी सामने रखते हैं। वो भारत के पश्चिमी तट के व्यक्तियों का भी उल्लेख करते हैं जहाँ रहने वाले व्यक्तियों के सम्पर्क में वे आये थे। उनके अनुसार ये "परिश्रमी, दब्बू कंजूस और कायर लोग

थे उनके दृष्टिकोण और आदतें रूढ़ियों से ग्रस्त थीं" इस रूढ़िवादिता के उदाहरण स्वरूप जाति प्रथा का बार-बार उल्लेख किया जाता था। कुल मिलाकर यह धारणा आगे भी बनी रही। हालाँकि स्थाई रूप से जमने के बाद अंग्रेजों को भारत के यथार्थ का सामना करने का और भी मौका मिला।

13.3 वारेन हेस्टिंग्स और भारत संबंधी ब्रिटिश धारणा

अंग्रेजों के मन में यह अवधारणा बनी हुई थी कि भारतीयों की अवनति हुई है: 18वीं शताब्दी की घटनाओं से यह धारणा और भी पुष्ट हुई। इसी के साथ-साथ आरंभिक प्रशासक भारत के अतीत के गौरव की बात करते थे। उनका मानना था कि भारत के प्रशासन को सही ढंग से नियंत्रित करने के लिए भारत और इसके अतीत का पूर्ण ज्ञान जरूरी है।

वारेन हेस्टिंग्स ने इस कार्य को अपेक्षाकृत गंभीरता पूर्वक लिया। वह जानता था कि इस कार्य को सम्पन्न करने के लिए कुछ ऐसे प्रशासकों की जरूरत है जो अपने स्वार्थों से ऊपर उठे हुए हों। इस उद्देश्य से उसने कुछ ऐसे संगठनों की स्थापना का प्रयत्न किया, जो भारत के स्वर्णिम अतीत संबंधी ज्ञान की खोज करें और फिर उन लोगों को इस ज्ञान से परिचित कराये जिन्हें इस देश का प्रशासन चलाना है।

यह दृष्टिकोण प्राच्यवादियों के दृष्टिकोण के रूप में जाना जाता है और वारेन हेस्टिंग्स के अलावा और लोग भी इसके समर्थक थे।

7 भारत में वारेन हेस्टिंग्स

13.3.1 विलियम जोन्स

इस उद्देश्य से एक अंग्रेज न्यायविद् विलियम जोन्स ने भारत को नये सिरे से जानना शुरू किया। विलियम जोन्स ब्रिटिश राजनीति की विग परम्परा का अनुयायी था और उसने अंग्रेजों को भारत की तस्वीर से परिचित कराने का बीड़ा उठाया। भारत आने पर जोन्स ने महसूस किया कि भारत को जानना एक व्यक्ति के वश की बात नहीं है। उसने अनुभव किया कि इसके लिए एक वैज्ञानिक अध्ययन की जरूरत है, जिसमें मेहनती और विद्वान लोगों की सहायता अपेक्षित है इस उद्देश्य से प्रसिद्ध एशियाटिक सोसाइटी की स्थापना हुई। इस सोसाइटी का उद्देश्य एशिया में रहकर और एशिया से बाहर रहकर दोनों प्रकार से हम महादेश की छिपी वास्तविकता को उजागर करना था।

जोन्स के प्रयासों और वारेन हेस्टंग्स के दृष्टिकोण का मेल इस सोसाइटी में हुआ। सोसाइटी को गवर्नर जनरल का पूरा समर्थन प्राप्त था। इस सोसाइटी ने भारत के सामाजिक धार्मिक, भाषायिक और राजनीतिक पक्षों का गहराई से और नजदीक से अध्ययन किया। वस्तुतः यह अध्ययन गहराई से किया गया, पहले यात्री आते थे, ऊपरी तौर पर भारत को देखकर, उसके प्रति एक धारणा बनाकर लौट जाते थे।

एशियाटिक सोसाइटी ने फारसी और संस्कृत ग्रंथों, पुराणों और कालिदास की रचनाओं को अनुवादित करने का महत्वपूर्ण कार्य किया। दूसरे, एशियाटिक सोसाइटी के सदस्यों ने भारतीय समाज और धर्म पर शोध किया और अनेक आलेख लिखे। इसके परिणाम स्वरूप भारत और उसकी संस्कृति से सम्पूर्ण यूरोप परिचित हो सका। इसमें जोन्स का योगदान उल्लेखनीय है।

13.3.2 हेस्टिंग्स की नीति : व्यवहार में

हेस्टिंग्स ने कुछ व्यावहारिक कारणों से एशियाटिक सोसाइटी को प्रोत्साहन दिया। इस समय तक उसने क्लाइव की "द्वैध नीति" को छोड़ने का मन बना लिया था और वह चाहता था कि बंगाल की ज़िम्मेदारी ईस्ट इंडिया कम्पनी अपने हाथों में ले ले। पर वह भारत में अंग्रेजी कानून और अंग्रेजी तौर तरीके लागू करने के पक्ष में नहीं था। उसका मुख्य विचार था कि "विजितों पर उनके तरीके" से शासन किया जाए। उसने अनुभव किया कि ब्रिटिश शासन के तीव्र विकास के कारण कुछ पूर्वाग्रह उभर कर सामने आये हैं। उसके विचार में इस प्रवृत्ति पर रोक लगनी चाहिए। दूसरे वह भारतीय संस्थाओं के साथ ब्रिटिश शासन का तादात्म्य स्थापित करना चाहता था। इसके लिए इस देश के "आचार और रीति रिवाजों" की गहराई से छानबीन और भारतीय साहित्य और कानून के व्यापक विश्लेषण की जरूरत थी। इस उद्देश्य से हेस्टिंग्स के एक महत्वपूर्ण सहकर्मी हैलहेड ने धार्मिक और रीति रिवाज संबंधी कानूनों की सूची तैयार की जिसे "जेंटू लॉ" के नाम से जाना गया। इस सूची को तैयार करने का उद्देश्य देश की जनता से मेल मिलाप या प्राप्त उपलब्धि को स्थिरता प्रदान करने वाली प्रक्रिया को समझना था। हैलहेड का मानना था कि इससे वाणिज्य और राज्य की स्थापना के अवसरों को और भी मजबूत बनाने में मदद मिलेगी।

13.4 संस्थानीकरण

आरंभ में समृद्ध भारतीय अतीत को खोजने का प्रयत्न किया गया। धीरे-धीरे यह प्रयत्न ब्रिटिश की व्यावहारिक का एक अंग बन गया। आगे आने वाले प्रशासकों को इस दिशा में प्रशिक्षित करने की वारेन हेस्टिंग्स की नीति का पालन वेलेज़ली ने भी किया और इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए उसने 1800 ई. में कलकत्ता में फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना की।

फोर्ट विलियम कॉलेज में छात्रों को विशेष रूप से भारतीय भाषाओं की जानकारी दी जाती थी ताकि जब वे भविष्य में प्रशासक का पद संभालें तब देशी भाषाओं और बोलियों से परिचित रहें और भारत के अतीत को सटीक ढंग से समझ सकें। मसलन फारसी भाषा का ज्ञान प्राप्त करना व्यावहारिक था। अधिकांश भारतीय राज्यों में सरकारी और काम काज की भाषा फारसी थी। इस प्रकार भारत के अतीत को जानने की ललक और ब्रिटिश प्रशासन की जरूरतें एक दूसरे में घुल मिल गयीं।

8 संपर्क का प्रयास : हुक्के के साथ एक अंग्रेज़

तत्कालीन प्रशासकों के भारतीय अतीत संबंधी दृष्टिकोण के बारे में भावी प्रशासकों को प्रशिक्षित करने के लिए उठाए गये कदमों को कम करके नहीं आंकना चाहिए। विभिन्न अधीनस्थ भारतीय शासकों के दरबार में नियुक्त भारत रेजिडेंट फारसी भाषा की जानकारी रखने के साथ उसका उपयोग भी करते थे और दरबार के सांस्कृतिक जीवन पद्धति को भी अपनाते थे। भारतीय दरबारियों से तादात्म्य स्थापित करने के लिए वें भारतीय वस्त्र पहनते थे और दरबार के नियमों का पालन करते थे। वे अधिकांश दरबार के नियमों और कायदों का भी पालन करते थे, जबकि शासक के सभी निर्णयों में उनकी हिस्सेदारी प्रमुख होती थी। इस प्रकार राजनीतिक दृष्टि से ब्रिटिश राज के अधीन होने के बावजूद भारतीय शासकों को एक प्रकार की सांस्कृतिक स्वतंत्रता थी।

पर अपनी स्थिति को मजबूत करने के लिए और एक अधिक सक्षम प्रशासनिक ढाँचा कायम करने के लिए अंग्रेजों के लिए कानून तथा भूमि संबंधी संपत्ति जैसी भारतीय संस्थाओं को जानना जरूरी था। इसी समय ब्रिटेन में औद्योगिक क्रांति हुई और ब्रिटेन से बाहर बाजार और कच्चे माल की खोज शुरू हो गई। वहाँ के उद्योगपतियों की इन जरूरतों का भी ब्रिटेन के नीति निधारकों को ध्यान रखना था।

9 नृत्य देखते हुए भारतीय परिवेश में कर्नल पोलियर

13.5 इवैंजेलिकलिज्म और अन्य नयी प्रवत्तियाँ

अंग्रेजों की इन नई जरूरतों को ध्यान में रखकर भारतीय संस्थाओं और कानूनों पर पुनर्विचार आवश्यक हो गया। नये उत्पादों की खपत के लिए एक नया माहौल बनाना जरूरी हो गया। इस दृष्टि से, कम से कम, समाज के ऊपरी तबके के रहन-सहन और संस्कृति को बदलना जरूरी हो गया।

आरंभ में भारतीय अतीत को जानने के लिए बनी संस्थाएँ एक प्रकार के समझौते का परिणाम थीं, जो कंपनी के वाणिज्य और प्रशासन के हितों को पूरा करती थीं। इनकी नीति थी "भारतीय समाज़ को जानो पर इस छोड़ों मत"। श्री रामपुर मिशनरियों ने एक तरह से इस समझौते का विरोध किया, जो भारतीय समाज की वर्तमान अवनति में "सुधार" लाना चाहती थी। हालाँकि श्री रामपुर मिशनरियों ने भारतीय परंपरा का सम्मान करते हुए यह काम चुपके-चुपके किया, पर चार्ल्स ग्रांट जैसे बाद के मिशनरियों ने "भारतीय बर्बरता" का खुल कर विरोध किया। चार्ल्स ग्रांट के इस विरोध के साथ इवैंजेलिकलिज्म की एक नई विचारधारा सामने आई जिसके पीछे भारत को "सभ्य" बनाने की इच्छा कार्यरत थी। उसने अपने इस प्रयत्न को ईसाई धर्म के रंग में रंग दिया और भारत को "सभ्य" बनाने का बीड़ा उठाया।

भारत को "सभ्य" बनाने का यह प्रयत्न ब्रिटिश उदारवाद की अभिव्यक्ति थी, जो यहाँ मैकाले के कार्यों के रूप में प्रकट हुई। उदारवादी ब्रिटिश प्रशासकों का उद्देश्य भारतीयों को दबाना नहीं बल्कि "सभ्य" बनाना था। ब्रिटेन के व्यापारी समुदाय ने "सभ्य" बनाने के इस प्रयास का समर्थन किया। इसके तहत जो कानून बनते उनसे उन्हें भारत में

संपत्ति बनाने का अधिकार मिलता और "मुक्त व्यापार" के द्वारा वे भारत में ब्रिटिश माल के खपत की समस्या का समाधान ढूँढ सकते थे। चार्ल्स ग्रांट भौतिक समृद्धि और सभ्यता की प्रक्रिया के तालमेल को अच्छी तरह समझता था। इसी ढर्रे पर 1838 ई. में एक अन्य उदारवादी सी.ई. ट्रेवेलियन ने भारत को "ब्रिटिश सद्भाव का गौरवशाली कीर्तिस्तम्भ" कहकर चित्रित किया।

बोध प्रश्न 1

1) विलियम जोन्स और भारत के बारे में लिखने वाले आरंभिक यात्रियों में क्या अंतर था?

....

....

....

....

....

2) वारेन हेस्टिंग्स भारत के अतीत का अध्ययन क्यों करना चाहता था?

....

....

....

....

....

3) क्या श्री रामपुर मिशनरी और चार्ल्स ग्रांट वारेन हैस्टिंग्स की भारत संबंधी नीति से सहमत थे?

....

....

....

....

....

13.5.1 सुधार के प्रयत्न

समृद्धि और सभ्यता के उन्नायक की भूमिका निभाते हुए ब्रिटेन द्वारा 18वीं शताब्दी के अन्त और 19वीं शताब्दी के आरंभ में "सुधार के विचार" को कार्यान्वित किया गया इस उद्देश्य को सामने रखते हुए कार्नवालिस ने बंगाल के जमींदारों के साथ राजस्व संबंधी स्थाई बंदोबस्त किया। कार्नवालिस का यह अनुमान था कि कृषि आय का मुख्य स्रोत है और इस कार्यवाई से कृषि क्षेत्र का पूंजी निर्माण और बाजार के लिए उपयोग किया जा सकता है इससे एक समृद्ध भूमिपति वर्ग तैयार हो गया जो राज्य के प्रति उत्तरदाई होगा। इससे एक ऐसा उद्यमी वर्ग पैदा होगा जो भूमि संबंधी विकास के साथ-साथ व्यापार को बढ़ाने में भी सहयोग देगा। जॉन शोर ने स्थाई बंदोबस्त की इस व्यवस्था को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण अदा की। उसे देहाती इलाकों का अनुभव था और उसने कार्नवालिस के सुधार संबंधी दृष्टिकोण का समर्थन किया। उसके अनुसार यह सुधार धीरे-धीरे नये प्रयोगों के माध्यम से लाना होगा और नये परिवर्तन के लिए प्रयास करने होंगे।

13.5.2 संरक्षण और मुनरो

दक्षिण में पदस्थ मुनरो और उसके प्रसिद्ध सहकर्मी मालकौम और मेटकाफ कार्नवालिस के आलोचकों में प्रमुख थे। उनके अनुसार कार्नवालिस की व्यवस्था में भारतीय इतिहास या अनुभव के प्रति कोई सम्मान भावना नहीं थी। उन्होंने इस बात का विरोध किया कि विदेशी अंग्रेजी परम्परा के सिद्धांतों के आधार पर एक राजनीतिक समाज का निर्माण किया जा सकता है। इसी कारण से उन्होंने कार्नवालिस द्वारा लागू किये गये अंग्रेजी शासन के कानून का विरोध किया, जिसमें सरकार की न्यायिक और कार्यकारी शक्तियों का कठोर विभाजन किया गया था।

मुनरो मानता था कि राजनीति में प्रयोग भी किए जाने चाहिए और इसे व्यावहारिक भी होना चाहिए। उसके विचार से ब्रिटिश शासन को स्थापित हुए अभी कम समय हुआ है और इतनी जल्दी स्थाई समाधानों की प्रस्तुति प्रासंगिक नहीं है। इसी कारण से उसने रैयतवाड़ी के सावधिक संशोधन का समर्थन किया (देखे खंड iv) उसका यह भी मानना था कि भारत की अक्षुण्ण परंपरा, खासकर ग्राम्य विशेषताओं को संरक्षित किया जाना चाहिए। किसी भी कानून और व्यवस्था की समस्या को सुलझाने के लिए ऐसी व्यवस्था कायम की जानी चाहिए जिसमें न्यायपालिका और कार्यकारी शक्तियाँ एक दूसरे में आबद्ध हों। उसके अनुसार इससे कृषकों के साथ न्याय हो सकेगा और साथ ही साथ ब्रिटिश शासन के उद्देश्यों की पूर्ति भी हो सकेगी।

10 एडमंड बर्क की मूर्ति के साथ विलियम हिकी

मुनरो और उसके सह-कर्मियों ने भारतीय परम्परा के संरक्षण की बात की और इस उद्देश्य से भारत में केंद्रीय सत्ता लागू किए जाने का विरोध किया और भारतीय सरकार के विकेंद्रीकरण पर बल दिया।

इस संदर्भ में भारतीय मस्तिष्क को बदल पाना एक जटिल कार्य हो गया। इस प्रक्रिया में उदारवादी मैकाले ने कहा कि भारत में शिक्षा का प्रसार ब्रिटिश प्रशासन की प्रमुख जिम्मेदारी है। यह मुद्दा विवाद के घेरे में आ गया। मैकाले की शिक्षा पद्धति का विरोध प्राच्यवादियों और मुनरो जैसे व्यावहारिक आँग्ल—भारतीयों ने किया जो भारतीय संस्था और संस्कृति को संरक्षित रखना चाहते थे। 19वीं शताब्दी के मध्य में पश्चिमी या अंग्रेजी शिक्षा पद्धति को लागू करने का मसला विवादास्पद हो गया।

13.6 उपयोगितावादी

उपयोगितावादी उदारवादियों के शिक्षा संबंधी उद्देश्य, मसलन भारत को सभ्य बनाना और उसका सुधार करना, से बिलकुल सहमत नहीं थे। उनका उद्देश्य यह था कि कानून और भूमि संबंधी नियमों को इस तरह बदला जाये कि बाजार निर्माण का रास्ता प्रशस्त हो। उनका विश्वास था कि प्रसिद्ध दार्शनिक जेर्मी बेंथम के निर्देशन में एक वैज्ञानिक और तर्क संगत दृष्टिकोण विकसित हो सकता है, यह कानून और भूमि संबंधी नियमों का ऐसा समाधान प्रस्तुत कर सकता है, जिससे "अधिक वस्तुएँ अधिक लोगों के लिये" सिद्धांत का पालन किया जा सकता है।

13.6.1 कानून का प्रश्न

उपयोगितावादियों के विचारों का भारत के प्रति ब्रिटिश दृष्टिकोण के निर्माण पर मूलभूत प्रभाव पड़ा। बेंटिक ने कानून को परिवर्तन का एक माध्यम बनाया। उसका विश्वास था कि सती और बालिका हत्या जैसे भारतीय रीति रिवाजों को कानून द्वारा ही रोका जा सकता है। जेम्स मिल के ईस्ट इंडिया कम्पनी के लंदन स्थित कार्यालय में पदस्थ होने के बाद उपयोगितावादियों ने प्राच्यवादियों (ओरियंट लिस्ट) कार्नवालिस और मुनरो की विरासत पर नपा तुला आघात किया और उनकी नीतियों को स्थगित करने की योजना बनाई। अपने सैद्धांतिक विश्वासों के आधार पर उपयोगितावादियों ने राजनीतिक सुधार को कार्य रूप देने का निश्चय किया। बेंथम के सिद्धांतों को आधार बनाकर कई कानून और दंड संहिताएं लागू की गयीं और एक ऐसी व्यवस्था कायम की गयी जो निचले स्तर तक जाकर लोगों को प्रभावित कर सके। इस उद्देश्य के लिए काम करने का निर्देश दिया गया।

222. *Bentinck's reply to the petition on* sati

14 July 1830

The governor-general has read with attention the petition which has been presented to him: and has some satisfaction in observing that the opinions of the pandits consulted by the petitioners confirm the supposition that widows are not, by the religious writings of the Hindus, commanded to destroy themselves; but that, upon the death of their husbands the choice of a life of strict and severe morality is everywhere expressly offered: that in the books usually considered of the highest authority it is commanded above every other course; and is stated to be adapted to a better state of society; such as, by the Hindus, is believed to have subsisted in former times.

Thus, none of the Hindus are placed in the distressing situation of having to disobey either the ordinances of the government or those of their religion. By a virtuous life a Hindu widow not only complies at once with the laws of the government and with the purest precepts of her own religion, but affords an example to the existing generation of that good conduct which is supposed to have distinguished the earlier and better times of the Hindu people.

The petitioners cannot require the assurance that the British government will continue to allow the most complete toleration in matters of religious belief; and that to the full extent of what it is possible to reconcile with reason and with natural justice they will be undisturbed in the observance of their established usages. But, some of these, which the governor-general is unwilling to recall into notice, his predecessors in council, for the security of human life, and the preservation of social order, have, at different times, found it necessary to prohibit. If there is any one which the common voice of all mankind would except from indulgence it is surely that by which the hand of a son is made the instrument of a terrible death to the mother who has borne him, and from whose heart he has drawn the sustenance of his helpless infancy.

The governor-general has given an attentive consideration to all that has been urged by the numerous and respectable body of petitioners: and has thought fit to make this further statement, in addition to what had been before expressed as the reasons, which, in his mind, have made it an urgent duty of the British government to prevent the usage in support of which the petition has been preferred: but if the petitioners should still be of opinion that the late regulation is not in conformity with the enactments of the imperial parliament, they have an appeal to the king in council, which the governor-general shall be most happy to forward.

सती के प्रश्न पर बेंटिक

13.6.2 भू-राजस्व का प्रश्न

मिल ने उपयोगितावादी अर्थशास्त्र के अनुरूप भू राजस्व में बदलाव लाने की नीति का समर्थन किया। इसमें एक तरफ मुनरो के रैयतवाड़ी बंदोबस्त की तरह किसानों से सीधे सम्पर्क स्थापित करने की बात की गयी (देखें खंड iv) और दूसरी तरफ रिकार्डों के सिद्धांत के अनुसार भूमिपतियों पर करारोपण का मसला सामने आया। यह करारोपण इस ढंग से किया गया था कि मात्र भूमि की मिल्कियत प्राप्त कर लेने से भूमिपतियों को उत्पाद और व्यापार के मामले में अतिरिक्त लाभ न पहुँचे। इसका अर्थ यह था कि भूमिपतियों को कुछ उत्पाद का एक हिस्सा देना होगा। इसका मतलब यह हुआ कि कुल उत्पाद में से खेती का खर्च निकालकर बची हुई राशि राज्य को देनी पड़ेगी।

राजस्व की इस नीति को प्रिंगल जैसे पदाधिकारियों ने बंबई में कार्य रूप दिया। भूमि के "कुल उत्पाद" को मापने के लिए व्यापक सर्वेक्षण किए गये। इसके बाद कर की दर निर्धारित की गयी। कर का यह निर्धारण काफी ऊंची दर पर किया और किसी-किसी स्थान पर यह कुल उत्पाद के 50 से 60 प्रतिशत तक भी पहुंच गया। इस कारण से जटिल आकलन पर आधारित राजस्व निर्धारण का इरादा छोड़ दिया गया। 1849 के दशक में परम्परा से चले आ रहे कर निर्धारण की पद्धति को अपनाया गया जिसमें अनुमान और अनुभव के आधार पर कर निर्धारण किया जाता था।

पर सिद्धांततः राजस्व निर्धारण के उपयोगितावादी दृष्टिकोण को नहीं छोड़ा गया। शुद्ध रूप में अनुमान और अनुभव पर आधारित होने के बावजूद राजस्व निर्धारण सिद्धांत में आंकलन का महत्व दर्शाया जाता रहा। इस सिद्धांत के

औचित्यनिर्धारण का कोई व्यावहारिक कारण नहीं था, क्योंकि आगे आने वाले दशकों में कर दे रहे किसानों के अधिकारों और दायित्व की बात पृष्ठभूमि में चली गयी थी। इसके बावजूद उपयोगितावादियों द्वारा मुनरो के समक्ष वैज्ञानिक आकलन (भारतीय परम्परा से संबंधित) प्रस्तुत किए गये। यह एक विरोधाभास सा प्रतीत होता है।

13.6.3 साम्राज्य का उभरता दृष्टिकोण

अँग्रेजी उपयोगितावादी विचार में एक निरंकुशता की प्रवृत्ति देखने को मिलती है जो बाहर के देशों में पूर्ण विकसित तानाशाही के रूप में स्थापित हुई। उदारवादी परम्परा में जन्म लेने के बावजूद उपयोगितावादी भारत में कभी भी प्रजातांत्रिक सरकार को स्वीकार नहीं कर सकें। जेम्स मिल ने तत्कालीन व्यवस्था में या भविष्य में हमेशा भारत में प्रतिनिधि सरकार की स्थापना का विरोध किया।

डलहौज़ी के नेतृत्व में साम्राज्य का दृढ़ीकरण हुआ, इसमें भारत संबंधी ब्रिटिश धारणा के अंतर्विरोध स्पष्ट रूप में उभर कर सामने आये। डलहौजी ने जेम्स मिल की धारणा को और आगे बढ़ाया तथा उसने देशी भारतीय राज्यों के प्रति आक्रमणकारी रुख अपनाया। इसके अतिरिक्त बेंथमवादी परम्परा का पोषण करते हुए उसने एक उच्चाधिकारी के नेतृत्व में अखिल भारतीय विभागों, मसलन डाक और तार विभाग, जन कार्य विभाग आदि की स्थापना की। इन विभागों की स्थापना करके वह एकीकृत अखिल भारतीय साम्राज्य के ढाँचे में कुशल प्रशासन की अवधारणा को अंजाम देना चाहता था। यह व्यवस्था मुनरो की भारत संबंधी धारणा के बिल्कुल विपरीत थी, जिसमें क्षेत्रीय राज्यों के एक ढीले संघ की बात की गयी थी।

12 जेम्स मिल

इसी के साथ-साथ कुल मामलों में डलहौजी ने उदारवादी दृष्टिकोण अपनाने की भी चेष्टा की। मसलन, उसने विधान परिषद को गैर अधिकारी विचारधारा की प्रतिनिधि संस्था के रूप में विकसित करने का प्रयत्न किया। उसने विधान परिषदों में भारतीय सदस्यों को शामिल किए जाने का भी समर्थन किया। उसने मैकाले की अंग्रेजी भाषा में शिक्षा देने की नीति का समर्थन किया। इसके साथ-साथ उसके सहकर्मी थामसन ने व्यापक रूप में देशी भाषाओं के माध्यम से शिक्षा देने का समर्थन किया।

इसके बावजूद यह धारणा धीरे-धीरे लुप्त हो गई कि भारतीय समाज को बदलने के लिए कानून, भूमि संपदा या शिक्षा को बदलना चाहिए। आचार संहिता, राजस्व प्रशासन, शिक्षा और अखिल भारतीय साम्राज्य के सुदृढ़ीकरण के बाद प्रशासन की कुशलता मुख्य मुद्दा बन गया। ब्रिटिश प्रशासन में व्यावहारिकता, तर्कसंगता और कार्यकुशलता को प्रमुखता दी जाने लगी। प्रशासन के लिए अभी भी उपयोगितावादी तर्कों का उपयोग किया जाता रहा, मैकाले के नेतृत्व में हुआ कानून संहिता संबंधी परिवर्तन इसका ज्वलंत उदाहरण है। पर, सम्पूर्ण रूप में सुधार की अवधारणा की बात कम की जाने लगी।

विवेच्य काल के बाद के ब्रिटिश प्रशासकों ने इस बात पर बार-बार जोर दिया कि ब्रिटिश प्रशासन को हमेशा कानून का सहारा लेना चाहिए। इस सन्दर्भ में यह भी तर्क दिया गया कि कशल प्रशासक के लिए बल प्रयोग लाजिमी है

और इसके लिए राजनीतिक बदलाव या सुधार जैसी बातों का कोई महत्त्व नहीं है। इस प्रकार भारत को सुधारने की व्यवहारवादी नीति का स्थान कुशल और अच्छी सरकार के सिद्धांत ने ले लिया और ब्रिटिश प्रशासन द्वारा कड़ा रुख अपनाया गया।

बोध प्रश्न 2

1) मुनरो कार्नवालिस का आलोचक क्यों था ?

....
....
....
....
....

2) बेंटिंक भारत में सामाजिक परिवर्तन कैसे लाना चाहता था ?

....
....
....
....
....

3) क्या जेम्स मिल भारत में प्रजातंत्र की स्थापना का समर्थक था ?

....
....
....
....
....

4) उपयोगितावादियों ने भू राजस्व की समस्या को किस प्रकार सुलझाने का प्रयत्न किया ?

....
....
....
....
....

5) क्या डलहौज़ी देशी राज्यों को अपने गिरफ्त में लेना चाहता था ?

....
....
....
....
....
....
....

13.7 सारांश

प्रत्येक साम्राज्य अपना एक तर्काधार ढूंढता है। हमने इस इकाई में देखा कि अपने विस्तार के क्रम में ब्रिटेन में "सभ्य बनाने की योजना" का सहारा लिया। एक तरफ उसने अपने लोलुप आक्रमणकारी और लूटमार के इतिहास को गौरवान्वित

करने की कोशिश की और दूसरी तरफ एक खास उद्देश्य से विभिन्न सिद्धांतों का प्रतिपादन किया। उद्देश्य सभी व्यक्तियों के लिए एक जैसा नहीं था। जैसा कि हमने देखा विलियम जैसे व्यवहारवादी, चार्ल्स ग्रांट जैसे इवैंजेलिकलिस्ट, जेम्स मिल जैसे उपयोगितावादी और मुनरो और डलहौजी के दिमाग में अलग-अलग बातें थीं। वस्तुतः भारत के निर्माण के संबंध में प्राच्यवादियों इवैंजेलिकलिस्ट और उपयोगितावादियों के विचार अलग-अलग थे। पर कुल मिलाकर इन सभी विचारों का उद्देश्य एक था और यह उद्देश्य तथा भारत में ब्रिटिश साम्राज्य का निर्माण।

13.8 शब्दावली

ईवेंजलिकलिज्म (Evangelicalism) : 18वीं शताब्दी के इंग्लैंड में हुआ प्रोटेस्टैंट क्रिश्चियन आन्दोलन जिसने रूढ़िवादी चर्च के विपरीत व्यक्तिगत अनुभव पर बल दिया, परम्परागत चर्च के विचारों को पढ़ने के बजाय गोस्पेल के विचारों के अध्ययन पर बल दिया।

विरोधाभास : अंतर्विरोधवक्तव्य, विश्वास आदि।

13.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) देखें उपभाग 13.3.1
2) देखें भाग 13.3, उपभाग 13.3.2
3) देखें भाग 13.5

बोध प्रश्न 2

1) देखें उपभाग 13.5.2
2) देखें उपभाग 13.6.1
3) देखें उपभाग 13.6.3
4) देखें उपभाग 13.6.2
5) देखें उपभाग 13.6.3

इस खंड के लिये कुछ उपयोगी पुस्तकें

Michael H. Fisher : *A Clash of Cultures : Awadh, the British and the Moghuls*, Manohar, New Delhi.

बिपन चंद्र : **आधुनिक भारत**, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली।

Tarachand : History of Freedom Movement in India, (Vols. 1 and 2), Publication Division, New Delhi.